विनोबा कथावली

■ वर्ष : प्रथम ■ अंक : १ ■ अगस्त 2024

कहानी एक आदर्श पाठशाला की

सारे देश में जहाँ लोग 'अच्छी शिक्षा' के नाम पर अपने बच्चों को महंगी इंग्लिश स्कूलों में भेज रहे हैं, शिरुर तहसील के लोग बेखटके अपने बच्चों को न्हावरे जिला परिषद प्राथमिक शाला में भेज रहे हैं।

न्हावरे (ता. शिरुर, जि. पुणे) :

३०० विद्यार्थी। हर दिन पूरी उपस्थिति। विद्यार्थी हमेशा स्कूल आने को उत्सुक। पढ़ाई के अलावा बाकी स्पर्धाओं में भी अग्रणी। ११ शिक्षक हैं यहाँ पर, जो जिले के बच्चों के लिए बेहतरीन शिक्षक तो हैं ही, पर स्कूल के सर्वांगीण विकास के लिये प्रेरित रहते हैं।

ये बात हो रही है, न्हावरे जिला परिषद प्राथमिक शाला की। जहाँ पर अभिभावक भी पेरेंट्स-टीचर्स मीटिंग में आने के लिये उत्सुक होते हैं। श्रम, धन, या किसी भी प्रकार से योगदान देने को तैयार रहते हैं, ताकि अपने बच्चों के लिये इस शाला में बेहतरीन सुविधाएँ हो सके।

असंभव सा लगता है ना? पर इस पाठशाला के प्रशासन ने ये कर दिखाया है, शिक्षक, अभिभावक, और विद्यार्थियों को इस कार्य से बड़ी खूबी से जोड़कर। सारे देश में जहाँ लोग 'अच्छी शिक्षा' के नाम पर अपने बच्चों को महंगी इंग्लिश स्कूलों में भेज रहे हैं, शिरुर तहसील के लोग बेखटके अपने बच्चों को न्हावरे जिला परिषद प्राथमिक शाला में भेज रहे हैं। कई लोगों ने तो अपने बच्चों को अंग्रेजी स्कूलों से निकालकर यहाँ पर प्रवेश करवाया है। हेडमास्टर सतीश पाचरणे बड़े गर्व बताते हैं कि ये सब आसान भी नहीं था। "यहाँ के शिक्षकों ने और बाकी कर्मचारियों ने बड़ी मेहनत और लगन से स्कूल को ऐसा बनाया है। अब ये एक बड़े से परिवार की तरह लगता है।"

एक तरफ जहाँ हम स्टैटस के नाम पर लोग सरकारी स्कूलों को छोड़कर प्राइवेट स्कूलों में भर्ती करा रहे हैं, ऐसी कई प्रेरणादायी कहानियाँ ओपन लिंक्स फाउंडेशन के फील्ड टीम को मिली हैं। गाँव गाँव जाकर ऐसी और भी कहानियाँ ढूँढकर आप तक पहुँचाने की ऊर्जा वो हमे देती हैं। हम ये काम करते रहेंगे, निरंतर। क्यूंकि हम मानते हैं कि हमारे देश की तमाम जिला परिषद की शालाएँ हमारे आँगन में ही छिपे खज़ाने की तरह हैं।

किस्सा गुड़ और मूंगफली का !

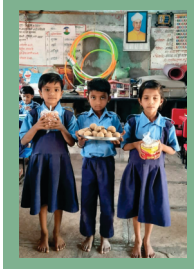

गुड़ की मिठास और मूँगफली की ताकत से, नितली के बच्चों ने सीखा जीवन का सबसे बड़ा पाठ - लोहे से भी मजबूत है प्यार और शिक्षा का रिश्ता।

पेज 5

"हाँ, वो स्पेशल है। हमारी चॅम्पियन है वरदा!"

दस वर्षीय मानसिक रूप से चुनौतीपूर्ण बेटी को कुछ महान करने के लिए प्रेरित करना कोई खेल नहीं था।....

पेज 7

सपनों की पाठशाला

(ता. पाथर्डी, जि. अहमदनगर):

और ये बात हो रही है एक जिला परिषद स्कूल की।

90.4 FM पर एक विशेष कार्यक्रम में, श्रोताओं को ये कहानी सुनने को मिली। सोमथाने तलवाडे के जिला परिषद स्कूल के दो शिक्षक, भागीनाथ बडे और नामदेव धायतडक, विनोबा ऐप पर 'पोस्ट ऑफ द मंथ' पुरस्कार जीतने के बाद अपने अनुभव साझा कर रहे थे। "हमारा स्कूल सिर्फ एक शिक्षण संस्थान नहीं, बल्कि सपनों की पाठशाला है," बडे जी ने गर्व से कहा। उन्होंने बताया कि कैसे उनके स्कूल ने छात्रवृत्ति परीक्षाओं पर विशेष ध्यान दिया। "हमने 11 छात्रों को तैयार किया, जिनमें से 9 चयनित हुए और 2 मेरिट लिस्ट में आए। यह हमारे लिए गर्व की बात है।"

धायतडक जी ने स्कूल में उपलब्ध सुविधाओं का वर्णन किया। "हमारे पास एक समृद्ध पुस्तकालय है, जहाँ छात्र हर शनिवार प्रेरणादायक पुस्तकें उधार ले सकते हैं। 8वीं कक्षा के छात्रों के लिए एक प्रयोगशाला भी है, जहाँ वे छोटे-छोटे प्रयोग करते हैं।"

कोरोना काल में, जब छात्रों का स्कूल आना मुश्किल था, इन शिक्षकों ने एक अभिनव समाधान निकाला। "हमने कॉर्ड ड्रिप सिंचाई प्रणाली शुरू की," बडे जी ने बताया। "शिक्षा विभाग ने 25 पौधों का लक्ष्य दिया था, लेकिन हमने इसे 150 तक पहुंचा दिया। आज हमारे स्कूल में 1,500 पौधे हैं।"

> **अब बच्चे छुट्टियों में दुखी हो जाते हैं, क्योंकि वे स्कूल नहीं आ सकते।**

इस हरित पहल के लिए, स्कूल को सामाजिक व्यक्तित्व नागरकर महाराज द्वारा 'ग्रीन स्कूल' का खिताब दिया गया और धाराशिव 'ग्रीन स्कूल पुरस्कार' के लिए चुना गया।

"हमने स्कूल को ऐसा बनाया है जहाँ बच्चे लंबे समय तक रहना चाहते हैं," धायतडक जी ने कहा। "अब बच्चे छुट्टियों में दुखी हो जाते हैं क्योंकि वे स्कूल नहीं आ सकते।"

गरीब छात्रों के लिए, स्कूल प्रधानमंत्री पोषण योजना का लाभ उठाता है। "हम छात्रों को अंकुरित अनाज, चावल और यहाँ तक कि उनकी पसंद के सूखे मेवे भी देते हैं," बडे जी ने बताया। "यह किसी भी स्कूल में अनसुना है।"

सांस्कृतिक गतिविधियों में भी स्कूल पीछे नहीं है। "हम छोटे नाटक और कहानी-कथन प्रतियोगिताएँ आयोजित करते हैं," धायतडक जी ने कहा।

शिक्षकों का समर्पण ऐसा है कि कई सरकारी अधिकारी गरीब लेकिन प्रतिभाशाली छात्रों को गोद लेकर उनकी शिक्षा का खर्च उठाते हैं।

तकनीकी चुनौतियों से भी ये शिक्षक पीछे नहीं हटते। "हम गूगल मीट, डिजिटल बोर्ड जैसी नई तकनीकों को सीखने में संकोच नहीं करते," बडे जी ने कहा। "हम अपने जूनियर सहयोगियों और यहाँ तक कि छात्रों से भी सीखते हैं।"

यह कहानी दर्शाती है कि जब शिक्षा में जुनून और नवाचार मिलते हैं, तो एक सामान्य सरकारी स्कूल भी चमत्कार कर सकता है। सोमथाने नलवडे का यह स्कूल आशा, कड़ी मेहनत और शिक्षा की परिवर्तनकारी शक्ति का एक ज्वलंत उदाहरण है, जो न केवल छात्रों के जीवन को, बल्कि पूरे समुदाय को बदल रहा है।

शिक्षक मित्र विनोबा ऐप

श्री आयुष प्रसाद, I.A.S. पूर्व CEO, पुणे ज़िल्हा परिषद ने विनोबा प्रोग्राम की पुणे जिल्हा में पहल की। श्री आयुष प्रसाद कहते हैं कि भारत सरकार का शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करने का गंभीर मकसद है। और विनोबा बड़े पैमाने पर नीति प्रसारण और शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करने में मदद करता है।

पुणे: श्री आयुष प्रसाद कहते हैं कि विनोबा की तेज सफलता और स्वीकारके कुछ महत्वपूर्ण कारण हैं।

- यह शिक्षकों के मानसिकता को समाहित करता है और उन्हें आकर्षित करता है।
- इसका इस्तेमाल करने के लिए शिक्षक प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं है। WhatsApp और Facebook की तरह शिक्षक इसे आसानी से अपना लेते हैं।
- विनोबा मंच पर दी गई शिक्षक सराहना शिक्षकों को और बेहतर करने के लिए प्रेरित करती है।
- डिजिटल शिक्षण संसाधन शिक्षकों द्वारा बहुत व्यवस्थित तरीके से बनाए जाते हैं और इनमे लगातार सुधार हो रहा है।
- डेटा इकट्ठा करना और उसका विश्लेषण (Data collection and Analysis) आसान होता हैं और इससे शिक्षकों और प्रशासकों का समय बचता है।
- यह जिला स्तर पर कार्यान्वयन (Program Implementation) में मदद करता है - शिक्षा अधिकारियों, क्लस्टर, ब्लॉक प्रमुखों, विस्तार अधिकारियों आदि - में समन्वय और सहयोग (coordination and collaboration) सरल बनाता है।

विनोबा एक उपयोगी और महत्वपूर्ण उपकरण और मंच के रूप में सिद्ध हुआ हैं। मुझे विश्वास है कि विनोबा आने वाले दिनों में देश में शिक्षा की गुणवत्ता सुधार में अहम भूमिका निभायेगा। संजय डालमिया और उनकी टीम को मेरी तरफ से बधाई और शुभकामनाएं।

दुर्ग (छत्तीसगढ़): हरेली तिहार के अवसर पर जिला परिषद स्कूल के बच्चों ने मिट्टी की मूर्ति, औजार और खिलौने बनाए। प्रोत्साहन स्वरूप, विनोबा ऐप से प्राप्त पेंसिल किट इनाम में दी गई, जिससे बच्चों में खासा उत्साह देखने को मिला एवं विनोबा की पूरी टीम को बच्चों ने 'थैंक यू' बोला।

गढ़चिरौली (महाराष्ट्र): जिला परिषद स्कूल ने कक्षा 5 और 8 के छात्रों के लिए छात्रवृत्ति अभ्यास परीक्षा लेने का फैसला किया है। ओपनलिंक्स फाउंडेशन इसमें परिणाम विश्लेषण के लिए मदद कर रहा है। 18 जुलाई 2024 कि पहली छात्रवृत्ति अभ्यास परीक्षा में कक्षा 5 के 6,064 छात्र और कक्षा 8 के 729 छात्र शामिल हुए थे।

भंडारा (महाराष्ट्र): दफ्तरमुक्त शनिवार के तहत, छात्रों के लिए स्कूलों में "किलबिल: मुक्त मंच" का आयोजन किया जाता है। इसमें छात्र कहानियाँ, कविताएँ, संवाद, नाट्य, नृत्य, मूक अभिनय, विज्ञान प्रयोग इत्यादि प्रस्तुत कर के विनोबा ऐप पर अपलोड करते हैं। इनमें से चयनित वीडियो को पुरस्कार दिये जाते हैं।

जशपुर (छत्तीसगढ़): ओपन लिंक्स फाउंडेशन (विनोबा टीम) द्वारा हर महिने आयोजीत किया जानेवाला टीचर्स का जिला स्तर का जून २०२४ का सम्मान समारोह जशपुर के बगिया गांव में आयोजित स्कूल उद्घाटन समारोह के हिस्से के रूप में आयोजित किया गया था। जिला कलेक्टर डॉ. रवि मित्तल ने मुख्यमंत्री आदरणीय विष्णू देव साय जी को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया था। बगिया मुख्यमंत्री के लिए एक विशेष स्थान रखता है क्योंकि यह उनका गृहनगर है। मुख्यमंत्री ने 'बोलेगा बचपन' पहल, कक्षा गतिविधियों, और क्लब-आधारित गतिविधियों को आगे बढ़ाने में सक्रिय भागीदारी के लिए पांच शिक्षकों और तीन क्लस्टर प्रमुखों को सम्मानित किया।

नागपूर (महाराष्ट्र): ओपन लिंक्स फाउंडेशन और पर्सिस्टेंट फाउंडेशन के बीच हुए सामंजस्य करार के अंतर्गत, 2023-24 सत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले हिंगणा तालुका के श्री अवधेश तिवारी और काटोल तालुका के दिलीप केने का जि.प. नागपूर की मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्रीमती सौम्या शर्मा मैडम के हाथों, और डॉ. हर्षलता बुराडे (प्राचार्य), श्री सिद्धेश्वर काळूसे (शिक्षणाधिकारी (प्राथमिक) की उपस्थिति में लैपटॉप और कंप्यूटर देकर सम्मान किया गया। हिंगणा तालुका की शुभांगी वालदे, हर्षा मोडक, सरिता वागदे, रामटेक के सचिन चव्हाण, ममता सोनमाने और पंजाब राठोड, और उमरेड की मीरा मुसळे का भी सत्कार किया गया।

नागपूर (महाराष्ट्र): जिला परिषद स्कूलों में कक्षा 5वीं से 9वीं के विद्यार्थियों की विभिन्न संकल्पनाओं और मौलिक गुणों को अवसर प्रदान करने के लिए ओपन लिंक्स फाउंडेशन की सहायता से जिला परिषद, नागपुर के माध्यम से 'लिटिल इनोवेटर' इस अभिनव पहल को लागू किया गया। इस कार्यक्रम के अंतर्गत विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत 45 परियोजनाओं में से अगले चरण के लिए 10 अभिनव परियोजनाओं का चयन किया गया। चयनित विद्यार्थी और उनके मार्गदर्शक शिक्षकों के लिए एक दिवसीय कार्यशाला 17 मई 2024 को पर्सिस्टेंट सिस्टम्स, आईटी पार्क, प्रतापनगर, नागपुर में आयोजित की गई। इस अवसर पर नागपुर जिला परिषद के मुख्य कार्यकारी अधिकारी सौम्या शर्मा और फाउंडेशन के संस्थापक संजय डालमिया भी उपस्थित थे।

दिल को छू लेने वाली केतकी की कहानी

ये कहानी हमें सोचने पर मजबूर करती है कि क्या हमारी शिक्षा प्रणाली हर बच्चे को समान मौका दे पा रही है? क्या हम उन बच्चों को भूल रहे हैं, जिन्हे ज़्यादा देखभाल की जरूरत है?

माताळवाडी (ता. मुळशी, जि. पुणे):

जिंदगी की शुरुआत में ही केतकी के सिर से माँ-बाप का साया उठ गया। छह साल की उम्र में पिता चल बसे, और माँ? वो तो जैसे हवा में गुम हो गई।दादी और दो छोटे भाई-बहनों के साथ केतकी अकेली पड़ गई। मामा ने पाला, पर किस्मत को कुछ और ही मंजूर था।

पिछले साल पता चला कि केतकी और उसकी छोटी बहन HIV पॉजिटिव हैं। अदालत के हुक्म से दोनों बहनों को मुलशी तहसील के भुगाव केंद्र के मातलवाड़ी जिला परिषद स्कूल में भेजा गया।

केतकी की टीचर सविता पवार बताती हैं, "२२ जून को जब केतकी, अंग्रेजी मीडियम छोड़कर मराठी मीडियम में दाखिले के लिए आई, "मैंने सोचा चलो बाकि बच्चों को अंग्रेजी सीखने में मदद मिलेगी। पर में हैरान रह गई जब केतकी बोली, 'मैडम, मुझे अंग्रेजी नहीं आती।' सातवीं क्लास में थी, पर अक्षर भी ठीक से नहीं पढ़ पाती थी।"

सविता मैडम आगे कहती हैं, जब केतकी की पूरी कहानी पता चली, तब समझ आया कि मामला गहरा है।

केतकी सातवीं में है, और उसकी बहन दूसरी में। दोनों अब इस जानलेवा बीमारी का इलाज करवा रही हैं, और पढ़ाई भी जारी है। सोचिए, इतनी छोटी उम्र में माँ-बाप खोना, और फिर एचआईवी का पता चलना - कैसा दर्द होगा?

पवार कहती हैं, केतकी ने अपना दर्द सालों तक छुपाए रखा। उसे खुलने में महीनों लगे। प्यार और हौसला देने से धीरे-धीरे उसने बोलना शुरू किया। पर केतकी में सीखने की ललक कूट-कूट

कर भरी है। जल्द ही उसने मराठी और अंग्रेजी दोनों में पढ़ना-लिखना सीख लिया। अब तो वह सही स्पेलिंग और वाक्य भी बना लेती है। सविता मैडम कहती हैं, उसकी बातचीत में भी निखार आ रहा है। सविता मैडम की आँखें नम हो जाती हैं जब वे कहती हैं, "केतकी के पुराने स्कूल में उसकी जिज्ञासा का कभी सम्मान नहीं हुआ। बस हुक्म चलाते थे - ये करो, वो करो। पूछने की इजाजत कहाँ थी? प्यार और हौसला तो दूर की बात। सोचती हूँ, आखिर माँ-बाप प्राइवेट अंग्रेजी स्कूलों के पीछे क्यों भागते हैं?"

केतकी की कहानी हमें सोचने पर मजबूर करती है। क्या हमारी शिक्षा प्रणाली हर बच्चे को समान मौका दे पा रही है? क्या हम उन बच्चों को भूल रहे हैं, जिन्हें ज्यादा देखभाल की जरूरत है? केतकी जैसे बच्चों के लिए स्कूल सिर्फ पढ़ने की जगह नहीं, बल्कि एक नई उम्मीद का ठिकाना होना चाहिए।

आइए, हम सब मिलकर एक ऐसा समाज बनाएँ जहाँ हर केतकी को अपने सपने साकार करने का मौका मिले। क्योंकि हर बच्चा खास है, और हर बच्चे में छिपी है एक अनोखी प्रतिभा।

किस्सा गुड़ और मूंगफली का !

नितली (ता. जि. धाराशिव):

नितली गाँव की प्राथमिक शाला में एक अनोखी क्रांति की शुरुआत हुई। टूटी-फूटी सड़कों और बिखरे हुए सपनों के बीच, दो शिक्षकों ने अपने प्यार और समर्पण से एक नया इतिहास रच दिया। जयश्री पुंडलिकराव माली और नितिन धगे - यह जोड़ा सिर्फ पति-पत्नी नहीं, बल्कि बच्चों के लिए माँ-बाप बन गए।

जयश्री मैडम की कल्पनाशीलता और नितिन सर ने मिलकर पढ़ाई को मज़ेदार बना दिया। बच्चे स्कूल छोड़ना भूल गए, बल्कि दूसरे स्कूलों के बच्चे भी यहाँ आने लगे। लेकिन एक दिन स्वास्थ्य टीम ने बताया कि बच्चों में खून की कमी है। यह सुनकर जयश्री मैडम विचलित हुई।

उन्होंने सोचा, हमारे बच्चे कमजोर कैसे हो सकते हैं? फिर एक चमक उनकी आँखों में आई। अगले दिन जयश्री और नितिन मूँगफली और गुड़ लेकर आए। बच्चों को यह मिठास खिलाई, जो उनके खून में लोहा भर दे। अपनी जेब से खर्च करके रोज़ यह नुस्खा पिलाने लगे।

जब बच्चों के माँ-बाप को पता चला, तो उन्होंने भी हाथ बँटाया। एक दिन एक पिता गुड़-मूँगफली का डिब्बा लेकर आया, मैडम, सिर्फ आप ही क्यों खर्च करें? ये हमारे बच्चे हैं, हम भी कुछ करेंगे।

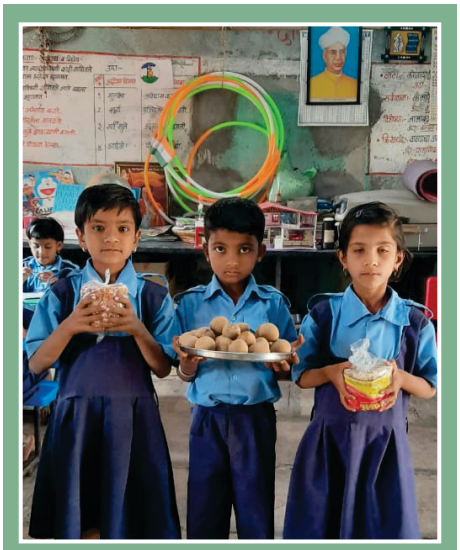

गुड़ की मिठास और मूँगफली की ताकत से, नितली के बच्चों ने सीखा जीवन का सबसे बड़ा पाठ - लोहे से भी मजबूत है प्यार और शिक्षा का रिश्ता।

धीरे-धीरे पूरा गाँव जुड़ गया इस मुहिम से।

बच्चों के चेहरों पर रौनक आने लगी। पढ़ाई में तेज़ी आई, खेल में फुर्ती। जब ज़िला परिषद के CEO मैनक घोष आए, तो वे दंग रह गए। पहली कक्षा के बच्चे दूसरी कक्षा का काम कर रहे थे!

खुश होकर उन्होंने स्कूल की चहारदीवारी बनवाने का वादा किया।

जयश्री मैडम और नितिन सर ने सिर्फ बच्चों को नहीं, पूरे गाँव को बदल दिया। उन्होंने साबित कर दिया कि प्यार और समर्पण से कोई भी मुश्किल आसान हो जाती है। उनकी कहानी हर उस माँ-बाप के लिए प्रेरणा है, जो शिक्षक के साथ मिलकर स्कूल को सुदृढ़ कर रहे हैं।

आज नितली की पाठशाला में सिर्फ किताबी ज्ञान नहीं, जीवन के पाठ भी पढ़ाए जाते हैं। यहाँ हर बच्चा एक कलियुगी अर्जुन है, जिसे जयश्री मैडम और नितिन सर जैसे कृष्ण मिले हैं। वे सिखा रहे हैं कि जीवन में सफलता पाने के लिए सिर्फ दिमाग में नहीं, रग-रग में लोहा होना चाहिए।

इस कहानी से सीख लें कि शिक्षक और अभिभावक की भागीदारी से छात्रों का स्वस्थ एवं सर्वांगीण विकास होता है । जयश्री और नितिन ने साबित कर दिया है कि अगर हौसला हो, तो एक छोटे से गाँव से भी बड़ी क्रांति की शुरुआत हो सकती है।

गुड़ की मिठास और मूँगफली की ताकत से, नितली के बच्चों ने सीखा जीवन का सबसे बड़ा पाठ - लोहे से भी मजबूत है प्यार और शिक्षा का रिश्ता।

यह मैं हूँ, फिर भी मैं नहीं हूँ

येडशी (ता. जि. धाराशिव) :

कठपुतली कलाकार उदयजी पाटिल ने अपनी कला का उपयोग सिर्फ पैसे कमाने या नाम बनाने के लिए नहीं किया। उन्होंने कला का उपयोग करके जो काम किया है, वह बहुत बड़ा है। यही बात है कि ओपन लिंक्स फाउंडेशन के इस संस्करण में उनकी कहानी का चयन हुआ है।

उदय पाटिल की कहानी एकलव्य की याद दिलाती है। जब वे एक प्रसिद्ध (कठपुतली कलाकार) वेंट्रिलोक्विस्ट से प्रभावित होकर उनके पास यह कला सीखने गये, तो उन्होंने सीखाने से मना कर दिया। इस इन्कार से हतोत्साहित होने के बजाय उदयजी ने उसीको अपनी प्रेरणा बना लिया। इस कला में वो माहिर बने, केवल स्वाध्याय से।

उदय पाटिल धाराशिव जिले के कलंब तहसील में स्थित बाभळगांव जिला परिषद स्कूल में शिक्षक हैं। उन्होंने वेंट्रिलोक्विज़्म कला की बुनियादी बातें एक कार्यशाला में सीखी थी और इसे पूरी तरह से सीखने का फैसला किया। गुरुके सिखाने से इनकार करने के बावजूद, पाटिल अपने खेत में अकेले ही इस कला का अभ्यास करने लगे, केवल अवलोकन और कल्पना के माध्यम से।

वो दोस्तों के सामने कर के दिखाते, और उनकी प्रतिक्रियाओं पर अपनी कला में सुधार करते। समय के साथ, हसमुखराव, वह कठपुतली जिसे उन्होंने बनाया था, विकसित हुई, वह बोलना सीख गई, परिस्थिति के अनुसार चुटकुले सुनाने लगी, राजनीतिक और सामाजिक व्यंग्य करने लगी, और दर्शकों का दिल जीतने लगी। "जो बातें मैं खुलकर नहीं कह सकता, वो मैं हसमुखराव के माध्यम से कह सकता हूँ। क्यूंकि लोग हसमुखराव की बातों को दिल से नहीं लगाते, और दोष भी उजागर हो जाते हैं। यह मैं हूँ, फिर भी मैं नहीं हूँ," उदयजी कहते हैं।

उन्होंने कला का उपयोग सिर्फ पैसे कमाने या नाम बनाने के लिए नहीं किया। उन्होंने जो काम किया है, वह बहुत बड़ा है। यही बात है कि ओपन लिंक्स फाउंडेशन के इस संस्करण में उनकी कहानी का चयन हुआ है।

वो लगातार कोरोना, खेती, चुनाव, स्वास्थ्य, सरकारी योजनाये, ट्रैफिक पर लोगों को जागरूक करने का काम करते हैं। उनकी ताज़ा मुहिम है 'निरक्षर भारत योजना'। "मैं राज्य स्तर के उत्सवों में कठपुतली के साथ एंकरिंग भी करता हूं..."

लगभग 24 साल से वे ये काम कर रहे हैं; 1,000-1,200 शो कर चुके हैं, और कई पुरस्कार भी प्राप्त कर चुके हैं। उन्हें और हसमुखराव को कई टीवी चैनलों पर बुलाया जाता है। "वैसे, टीवी से याद आया, कि वही मशहूर व्यक्ति, जिन्होंने सालों पहले मुझे सिखाने से मना कर दिया था, अब हाल ही के एक टीवी इंटरव्यू में इस बात का दुख जताते नज़र आए कि वेंट्रिलोक्विज़्म की कला धीरे-धीरे खत्म हो रही है," पाटिल कहते हैं।

हसमुखराव की मदद से उन्होंने बच्चों को पढाना भी मजेदार बना दिया। स्कूल में घटती हुई विद्यार्थियों की संख्या फिर से बढ़ाई। अपनी कठपुतली द्वारा वे किसानों को भी मार्गदर्शन करते हैं, खेती के नई नई तकनीकें उन तक पहुंचाते हैं।

उदय पाटिल के रूप में OLF ने पाया है एक और उदाहरण कि जिला परिषद स्कूलों के शिक्षक किस दर्जे की गुणवत्ता प्रदान कर सकते हैं। उनका काम इस धारणा को गलत साबित करता है कि सरकारी स्कूलों में पढ़ाई बिल्कुल नहीं होती। लेकिन OLF को उदय पाटिल जैसे लोगों पर पूरा भरोसा है, और जिला परिषद की शालाओं पर भी।

(कविता)

भैरवगड (नरडवेचा)

कणकवली तालुका
सिंधुदुर्ग जिल्हा
डोंगरी वनदुर्ग प्रकारचा
पाहू भैरवगड किल्ला...॥१॥

महाराष्ट्रात पाच भैरवगड
पैकी हा एक भैरवगड
रांजणगड उपनावानेही
परिचित होता भैरवगड...॥२॥

जवळचे गाव नरडवे
म्हणे नरडवेचा भैरवगड
गडी भैरवनाथाचे मंदीर
म्हणून नाव भैरवगड..॥३॥

सहा-सात एकरात
गड दाक्षिणोत्तर विस्तार
माची पासून वेगळा ठेवण्या
गडाला खंदकाचा आधार...॥४॥

निसर्ग संपन्न भैरवगडी
गडनदीचे उगमस्थान
चतुर्भुज रचनेची दीपमाळ
सोडी घाट निरीक्षणाचे बाण..॥५॥

- हरिश्चंद्र खेंदाड

जिल्हा परिषद शाळेचे
खेंदाड सर "गड काव्यांजली"
या सदराखाली महाराष्ट्रातील
गडांच्या इतिहासाविषयी लिहीतात.

हौसलों की उड़ान

दस वर्षीय मानसिक रूप से विकलांग बेटी को कुछ महान करने के लिए प्रेरित करना कोई खेल नहीं था। लेकिन इन माता-पिता ने हार नहीं मानी। पिता संतोष ने स्वयं तैराकी सीखी ताकि वे वरदा का साथ दे सकें। उनका यह समर्पण देखकर आँखें नम हो जाती हैं।

बारामती: वरदा से आप फोन पर बात करें तो आप पहचान नहीं पायेंगे कि वो एक विशेष बच्ची है? 'बाल कल्याण मतिमंद मुलांची शाळा' की इस छात्रा ने अपनी वाणी, व्यवहार और तैराकी पर ऐसी महारत हासिल की है कि देखकर दंग रह जाएंगे आप।

महज अठारह वर्ष की वरदा अब राष्ट्रीय स्तर की तैराक है। स्पेशल ओलंपिक्स भारत, पैरालंपिक्स, समुद्री तैराकी प्रतियोगिताओं में वो शीर्ष स्थान पर रही है। उसकी उपलब्धियाँ सुनकर आप भी दंग रह जाएंगे।

"शुरुआत में तो स्विमिंग पूल के पास ले जाना भी टेढ़ी खीर था। उसके डर से निपटना हमारे लिए एक अनजान राह थी। तीन साल की कड़ी मेहनत के बाद वो पानी में उतरी। और आज? आज वो पानी को चीरती हुई ऐसे तैरती है जैसे मछली," वरदा के माता-पिता गर्व से बताते हैं।

वरदा की माँ अनघा कुलकर्णी एक शिक्षिका हैं, पिता संतोष विद्या प्रतिष्ठान में कार्यरत हैं। डॉक्टरों की सलाह पर उन्होंने वरदा को शारीरिक गतिविधियों में व्यस्त रखने का निर्णय लिया। यह निर्णय उनके जीवन का टर्निंग पॉइंट बना।

"हम 365 दिन अभ्यास करते हैं। एक दिन भी चूकते नहीं। इससे न सिर्फ वरदा स्वस्थ रहती है, बल्कि उसका मस्तिष्क भी सक्रिय रहता है. यह उसके दैनिक जीवन में भी सहायक है," संतोष बताते हैं। उनका यह दृढ़ संकल्प सचमुच सराहनीय है।

वरदा अब नियमित रूप से राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भाग लेती है। स्पेशल ओलंपिक भारत में तो वो अकेले ही रहती है। "बेटी को एक सप्ताह के लिए अपनी नज़रों से दूर रखना कठिन है। पर यह देखकर गर्व भी होता है कि वो अब अकेले सब कुछ संभाल लेती है," संतोष कहते हैं। उनकी आँखों में चमकती खुशी देखते ही बनती है।

चुनौतियाँ कम नहीं। शाकाहारी होने के कारण प्रोटीन की पूर्ति एक बड़ी चिंता है। प्रतियोगिताओं, अभ्यास, वस्त्रों - हर छोटी-बड़ी बात का ध्यान रखना पड़ता है। लेकिन इस परिवार के लिए कोई भी चुनौती बड़ी नहीं।

"पानी में तो वो मछली-सी तैरती है, पर बाहर हर दिन हम तीनों के लिए एक नई परीक्षा है। वो अन्य बच्चों की तरह कभी पूरी तरह स्वतंत्र नहीं हो पाएगी। हमें हर पल सतर्क रहना होता है।"

इस अद्भुत जोड़े ने चुनौतियों के सागर में डूबना नहीं, तैरना सीखा है। वे निरंतर सीखते और सिखाते हुए, एक नई मिसाल कायम कर रहे हैं। वे सिर्फ माता-पिता नहीं, बल्कि आदर्श शिक्षक भी हैं।

वरदा की कहानी हमें सिखाती है कि प्यार, समर्पण और दृढ़ संकल्प से कोई भी लक्ष्य असंभव नहीं। यह कहानी हर उस माता-पिता के लिए प्रेरणास्रोत है, जो विशेष बच्चों के साथ अपनी यात्रा शुरू कर रहे। याद रखें, हर बच्चा खास है, और हर बच्चे में छिपी है एक अनोखी प्रतिभा। बस जरूरत है उसे पहचानने और निखारने की।

THE TIMES OF INDIA
PUNE 8 AUG 2024 elink

Vinoba Bhave app boosts skills in over 3,000 Pune ZP schools

SwatiShindeGole
@timesofindia.com

Pune: Acharya Vinoba Teacher Assistance programme, started in January 2023 as a transformative journey to enhance foundational learning and literacy skills by Pune zilla parishad for primary students in 3,690 schools across the district has begun showing results.

The initiative has improved basic skills of students. An eight-week programme led to an 8% improvement in foundational literacy and numeracy. It facilitated continuous monitoring for 12,311 teachers benefiting 2,10,000 students.

Balkrushna Watekar, principal of District Institute of Education and Training (DIET), said, "The achievements of Acharya Vinoba Teacher Assistance programme in Pune district bring hope. Targeted interventions, technology and a focus on support for teachers have collectively elevated the standard of education. It can shape future generations."

The programme envisioned by former chief executive officer of Pune ZP Ayush Prasad improved coordination and communication across layers of administration and fostered a spirit of teamwork.

The initiative has streamlined the implementation of educational programmes and facilitated quick progress.

Open Links Foundation which takes technology and behavioural science to govt schools played a crucial role. Founder Sanjay Dalmia said, "The programme's approach focused on engagement and adoption. It connects the delivery chain of education, and teachers and cluster heads are recognized each month to boost their motivation."

HOW DOES IT WORK?

- Tools such as gamification, recognition, likes, share, rewards are used to build engagement
- Students in primary schools would read the same books per class repeatedly in different cycles
- In secondary schools, book-reading sessions would be held followed by book review and discussions
- Mathematical processes taught in school were identified and made into simple stories
- There are a series of questions for practice

"The Vinoba initiative is a smartphone app where managements and all teachers must register. Each teacher is identified and associated with a UDISE code which is part of the ministry of education's school database. Coordination and communication for implementing programmes, receiving feedback, and evaluating results between teachers and various layers of administration including CRC, BRC and DIET have improved for teamwork

Ayush Prasad | FORMER CEO OF PUNE ZP WHO LAUNCHED THE INITIATIVE

नए शैक्षणिक वर्ष की शुरुआत के साथ - विनोबा कार्यक्रम अकादमिक और Life skills कार्यक्रम के लिए जिलों के साथ काम कर रहा है।

जुलाई-२४ में - ४ जिलों में २४०,००० से अधिक छात्रों के लिए FLN के लिए बेस लाइन मूल्यांकन आयोजित किया गया था। ५ जिलों में १२८,००० से अधिक छात्रों के लिए J N V , N A S और scholarship के लिए अभ्यास परीक्षण आयोजित किए गए। कक्षा १०वीं और १२वीं के लिए ७२,००० से अधिक छात्रों के लिए ४ जिलों में अभ्यास परीक्षण आयोजित किए गए। अच्छे प्रदर्शन वाले शिक्षकों, संकुल प्रमुखों और स्कूलों को सम्मानित किया गया।

नियमित अभ्यास, टाइम फीडबैक और प्रेरित शिक्षक - से सीखने के परिणामों में सुधार होगा।

ओपन लिंक्स फाउंडेशन १८ जिलों में १३३००० शाला और १ लाख से अधिक शिक्षकों के साथ काम करता है।

ग्रिल

4 + 4 = 8
5 + 5 = 15
6 + 6 = 24
9 + 9 = ?

Answer is 45

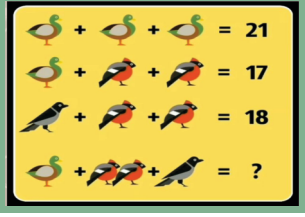

Answer is 25

Maha to Incorporate Classes up to Grade 8 into Local Self-Government Primary Schools

The state department of education has decided to integrate all classes up to Class 8, including lower secondary classes, into local self-government primary schools in Maharashtra as part of the changes being made to the education system in accordance with the National Education Policy (NEP) 2020. The goal of this initiative is to empower and upgrade these schools while also monitoring the dropout rate among students from these institutions. *(Pune Pulse)*

स्कूलों की छुट्टियां: अगस्त 2024 में कई जिला परिषद स्कूल छुट्टियों की वजह से बंद रहेंगे। इसमें स्वतंत्रता दिवस, रक्षा बंधन, जन्माष्टमी जैसे त्योहार शामिल हैं, जिससे लंबे वीकेंड मिलेंगे.

राष्ट्रीय शिक्षा नीति का कार्यान्वयन

छत्तीसगढ़ में नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत कई सुधार किए गए हैं। नए सत्र से, बोर्ड परीक्षाएं साल में दो बार आयोजित की जाएंगी - पहली मार्च में और दूसरी जून-जुलाई में। यह कदम छात्रों को अधिक अवसर देने और उनकी तैयारी को और बेहतर बनाने के उद्देश्य से लिया गया है

विनोबा कार्यक्रम शिक्षा का स्तर बढ़ाने के लिए, जिला प्रशासन के साथ मिलकर शिक्षकों की सहायता कर उन्हें प्रोत्साहित करता है, और विविध कार्यक्रमों को लागू करने की क्षमता बढ़ाने पर काम करता है।